

पद १३९

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

जबही धनुख तोरे रघुराई । देखत जनक आनंद भयो है ॥ध्रु.॥
कोमल शरीर राम अति छोटा । कैसे ये धनुख बिदारे है ॥१॥
मुनिने सुनाये जनक को । ये भगवानअवतार लियो है ॥२॥ मानिक
के प्रभु धनुख तोरे तब । भूपन मुख मुकराय गयो है ॥३॥